आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received:16\12\2021; Accepted:16\12\2021; Published:24\12\2021

हिन्दी नवगीत परंपरा: एक विश्लेषण

- डॉ.एस.ए.मंजुनाथ
हिन्दी विभागाध्यक्ष
पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु, कर्नाटक-574141
अध्यक्ष: मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास)
अध्यक्ष: कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय कॉलेज हिन्दी प्राध्यापक संघ, बेंगलूरु

डॉ.एस.ए.मंजुनाथ, **हिन्दी नवगीत परंपरा: एक विश्लेषण**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर ,2021(109-116)

हिन्दी काव्यधारा में नवगीत एक नवीन विधा है जो हिन्दी साहित्य के भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और उसके बाद छायावादी कविता का युग गीत विधा के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा । मीराबाई, विद्यापति, सूरदास, तुलसीदास और लोकगीतों की हिन्दी साहित्य की एक विशेष एवं समृद्ध परंपरा इस काव्यधारा के लिए प्रेरणा स्रोत है । हिन्दी में महादेवी वर्मा, निराला, बच्चन, सुमन, गोपाल सिंह नेपाली आदि कवियों ने काफी सुंदर गीत लिखे हैं और गीत लेखन की धारा भले ही कम रही है पर कभी भी पूरी तरह रुकी नहीं। इन कवियों ने जनसामान्य के रागात्मक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने के अलावा उनके मनोभावों, स्वभावों और संवेदनाओं को अपनी गीतों के माध्यम से जन-भूति पर प्रस्तुत करने के साथ सुंदर एवं सकारात्मक मानवीय सरोकारों को फलने-फूलने और विकसित होने के लिए एक व्यापक फलक प्रदान किया।

नवगीत की औपचारिक शुरुआत नयी कविता के दौर में ही उसके समानांतर विधा के रूप में हुई । नवगीत एक यौगिक शब्द है, जिसमें नव (नवीन कविता) और गीत (गीत विधा) का संयोग है । नवगीत और गीत में समय अर्थात काल का अन्तर है। दोनों का विभाजन आस्वादन के स्तर पर सकते हैं। जैसे आज के समय कोई छायावादी गीत रचें तो उसे आज का नहीं माना जाता और उस गीत को छायावादी गीत ही माना जायेगा। इसी तरह निराला के बहुत सारे गीत, नवगीत हैं, मगर वे नवगीत की स्थापना के पहले रचे हुए हैं।

दूसरा अंतर यह है कि दोनों में रूपाकार का होना। नवगीत तक आते-आते बहुत सी वर्जनाएं टूट गईं। नवगीत में कथ्य के स्तर पर रूपाकार बदला जा सकता है। रूपाकार बदलने में लय महत्वपूर्ण 'फण्डा' है। जबकि गीत का छन्द प्रमुख रूपाकार है।

तीसरा अंतर कथ्य और उसकी भाषा का है। नवगीत के कथ्य में समय सापेक्षता है। वह अपने समय की हर चुनौती को स्वीकार करता है। गीत की आत्मा व्यक्ति केन्द्रित है और नवगीत की आत्मा समग्रता में है। भाषा के स्तर पर नवगीत छायावादी शब्दों से परहेज करने की तरह दिखाई देता है। समय के जटिल यथार्थ आदि की वजह से वह छन्द को गढ़ने में लय और गेयता को ज्यादा महत्व देता है।

नवगीत के तीन प्रमुख तत्व हैं । अपने नवीन रचना-बोध और तीन प्रमुख तत्त्वों के कारण नवगीत बदलते समय के साथ अपनी सार्थकता सिद्ध करते हुए दिख रहा है । तीन प्रमुख तत्त्व इस प्रकार हैं – **पहला-** गीत का मूल भाव सत्य पर आधारित हो, जिसे सहज और स्वाभाविक शैली में अभिव्यक्त किया जाए। **दूसरा-** गीत-रचना में भी नवीन शिल्प-विधान का समावेश किया जाए, और **तीसरा-** समाज के उपेक्षित वर्ग को भी अभिव्यक्ति में प्रर्याप्त स्थान प्राप्त हो। नवगीत में 'नव' को अनुभूत और अभिव्यक्त करता है । लेकिन अक्सर ऐसा हुआ है परंतु नवगीत में 'नव' तत्त्व को अधिक मुखर करने के प्रयोग में उसके 'गीत' तत्त्व की अधिक मात्रा में उपेक्षा हो रही है । इस कारण अपने उपयुक्त व्याकरण की कमी के साथ विखंडित रूप में यह विधा विकसित होती गई ।

नवगीत के संदर्भ में 'गीत' होना उसकी पहली शर्त उसमें गीत के समस्त तत्त्वों यथा-भावमयता, मनोवैज्ञानिक आधार, भावान्वित, संक्षिप्तता, सहज अंतः प्रेरणा, गेयता और ग्राह्य भाषा-शैली का समावेश होना है, अगर ऐसा नहीं होता है तो वह गीत, नई कविता या अकविता है । आये दिन नवगीत के सही स्वरूप को समझे बिना लिखनेवाली रचनाओं को नवगीत की श्रेणी में रखा जा रहा है। यह स्थिति भविष्य में नवगीत और नई कविता के विवाद को और उलझा सकती है। गीत की शाश्वत विशेषताओं के साथ, समय की सापेक्ष आवश्यकताओं के अनुरूप सार्थक कथ्य को नये बिंबो, प्रतीकों, उपमाओं व उपमानों के माध्यम से, सहज बनाकर स्वयं को अभिव्यक्त करने की विधा को नवगीत कह सकते हैं ।

साहित्यिक जगत् के नवगीत आंदोलन के प्रभाव से हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य भी अछूता नहीं रह पाया है। इस शैली और तेवर के गीत हिन्दी चित्रपटों में भी दिखाई पड़ते रहे हैं जो अपने समय के हिसाब से नवगीत की श्रेणी में ही अपना स्थान सुरक्षित रखते हैं। वैसे हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य, मान्य गीतिकाव्य की दृष्टि से सरलता, सहजता, शिल्प और अभिव्यक्ति के सन्दर्भों में 'अस्वीकृत श्रेणी' का 'नव' ही रहा है, जबकि वास्तव में ऐसा है नहीं।

नवगीत में एक मुखड़ा और दो या तीन अंतरे का होना अनिवार्य है । अंतरे की अंतिम पंक्ति मुखड़े की पंक्ति के समान (तुकांत) हो जिससे अंतरे के बाद मुखड़े की पंक्ति को दोहराया जा सके । नवगीत में छंद से संबंधित कोई विशेष नियम नहीं है लेकिन पंक्तियों में मात्राएँ संतुलित हो जिससे गेयता और लय में रुकावट न हो सके। नवगीत सृजन के समय कुछ बातें ध्यान देनी चाहिए । नवगीत लिखते समय सकारात्मक सोच होना चाहिए । शब्द-भंडार जितना अधिक होगा नवगीत उतना अच्छा लिख सकते हैं । अधिक मात्रा में नए प्रतीक व

नए बिम्बों का प्रयोग करना है । नवगीत लिखने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि प्रकृति का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण करें और जब स्वयं को प्रकृति का एक अंग मान लेगें तो लिखना सहज हो जाएगा। संस्कृति व लोकतत्त्व का समावेश हो। बात कहने का ढंग कुछ नया हो और जो कुछ कहें उसे प्रभावशाली ढंग से कहें। तुकान्त की जगह लयात्मकता को प्रमुखता दें। नवगीत को छन्द के बंधन से मुक्त रखा गया है परंतु लयात्मकता की पायल उसका शृंगार है, इसलिए लय को अवश्य ध्यान में रखकर लिखें और उस लय का पूरे नवगीत में निर्वाह करें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना जरूर है।

गीत के पारंपरिक विधा में समाज में नित-प्रतिदिन बढ़ रहे जनता के असंतोष, बदलते जीवन-मूल्यों, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर घटते घटनाओं, ग्रामीण बोध की व्यापकता और महानगरीय शहरीकरण के प्रति बढ़ता आक्रोश की अभिव्यक्ति पाना आसान नहीं था । इस कारण से नवीन भाव, शिल्प तथा कथ्य के नवीन आयामों के साथ साहित्यकारों ने नवगीत विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना आरंभ किया । नवगीत में पारंपरिक गीतों के शिल्प-बुनावट और भाव-सम्प्रेषण की भंगिमा से मुक्त होने की छटपटाहट दिखती है । नवगीत में नवीन आयामों एवं परिधानों को स्वीकारने की ललक स्पष्ट रूप में दिखाई देती है ।

गीत के सम्बन्ध में नचिकेता जी का यह कहना कितना सही है “गीत की रचना का सम्बन्ध लोक (जन)-मन की गति से होता है। गीत में जनमन के अवसाद-उल्लास, सुख-दुख, उत्सव-आनन्द, हँसी-खुशी, अवसाद-उल्लास, उमंग-उत्साह, आशा-आकांक्षा, जय पराजय और परिवर्तनकामी संघर्ष-चेतना की अभिव्यक्ति होती है साथ ही जन-आन्दोलन में गीत रचना की लोकप्रियता, रचनात्मक गतिशीलता और विकास को सही दिशा मिलती है| तात्पर्य यह है कि गीत जब-जब जनमन और जन आन्दोलनों के करीब आया है उसकी रचनाशीलता गतिशील हुई और उसकी लोकप्रियता भी बढ़ी है|” 1

डा.कृष्णकुमार शर्मा नवगीत की एक विशेष प्रकार की परिभाषा देते हैं – “नवगीत और पारंपरिक गीत में एक अंतर उसकी योग्यता को लेकर है । नवगीत गाया न जाकर भी गीत है । नवगीत की कथन शैली में ही उसका गीतत्त्व है”। 2

नवगीत को किसी काल सीमा में बांधना कुछ विद्वानों को ठीक नहीं लगता| वे प्रत्येक समय में लिखी गयी नवीन अभिव्यक्ति-काव्य क्षमता को नवगीत मानने के हिमायती हैं । इस दृष्टि से नवगीत का अर्थ और उसके उद्भव-वर्ष पर प्रकाश डालते हुए शम्भूनाथ सिंह जी ने लिखा है-“नवगीत एक आपेक्षिक शब्द है । नवगीत की नवीनता युग सापेक्ष्य होती है । किसी भी युग में नवगीत की रचना हो सकती है। गीत-रचना की परम्परा-पद्धति और भावबोध को छोड़कर नवीन पद्धति और विचारों के नवीन आयामों तथा नवीन भाव-सरणियों को अभिव्यक्ति करने वाले गीत जब भी और जिस युग में भी लिखे जायेंगे, नवगीत कहलायेंगे|”3

नवगीत के संबंध में बनारसी नवगीत के पुरोधा पुरुष “नवगीत दशक”, “नवगीत दशक दो”, तथा “नवगीत –तीन”, के संपादक और “नवगीत अर्धशती”, के रचयिता डा. शंभूनाथ सिंह कहते हैं –“जितनी आसानी

से कोई समकालीन कवि बन सकता है उतनी आसानी से नवगीतकार नहीं । नवगीत में धंद लिखना जरूरू है, छंद लिखना आसान नहीं है । छंद नहीं होगा तो वह नवगीत होगा ही नहीं ।“4

स्वरूप की दृष्टि से गीत, नवगीत और नयी कविता के अंतर को स्पष्ट करते हुए शंभूनाथ सिंह लिखते हैं- “नवगीत स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तीन दशकों में विकसित वह नवीन काव्यधारा है जो एक ओर तो पारंपरिक गीत धारा से नितांत भिन्न है, दूसरी ओर सामयिक नयी कविता से कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर पूरी तरह अलग हटी हुई है| मात्र गीत कहने से उसकी पहचान खो जाती है और नयी कविता कहने से उसकी अस्मिता ही लुप्त हो जाती है| अतः नवगीत ही सार्थक नाम है|”5

इस प्रश्न पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए प्रो. विद्यानन्दन राजीव ने कहा है कि - “हम उस गीत को नवगीत कहेंगे जो परम्परागत भावबोध से अलग, नवीन भावबोध तथा शिल्प द्वारा प्रस्तुत किया गया हो।”6

नवगीत के इस मन्तव्य को स्पष्ट करते हुए यहाँ हरिवंशराय बच्चन के विचारों के अवश्य समझना चाहिये। इस सन्दर्भ में उनका कहना है कि - “मेरी राय में गीत के लिये पुराने उपकरण ही अधिक उपयोगी होते हैं। नये उपकरणों के साथ जब सन्दर्भ, राग, भावनाएँ जुड़ जाती हैं तभी वे गीतों में काम आ सकते हैं, तभी उनमें भावोद्‌बोधक शक्ति आ जाती है। गीत का काम है तुरन्त भावों को उद्‌बुद्ध कर देना। नये उपकरणों का अर्थ लगाने में बुद्धि फँस गई तो गीत गया, गीत का प्रभाव गया।.......नई अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में सहज ही जो ‘नया’ आ जाए उसका मैं विरोधी नहीं हूँ। परख यही होगी कि ‘नये’ में भावों को उद्‌बुद्ध करने की शक्ति है या नहीं। नहीं है तो ऐसी अभिव्यक्ति को मैं सफल गीत नहीं मानूँगा।” 7

नवीन पद्धति और विचारो के नवीन आयाम हिंदी गीतों में छायावाद के दौर से ही शुरु होते हुए दिखाई देता है । महादेवी वर्मा, निराला, पंत, और प्रसाद को इस नवीन परम्परा को प्रारंभ करनेवाले हैं। इनके गीतों में नवीनता दिखता है। परंपरा को तोड़कर नवीनता के स्वरुप में प्रतिष्ठापित करना, उस समय के प्रतिरोध को सहने की क्षमता विकसित करने के सवाल के साथ नवीन रीतियों तथा आयामों के सृजन करने की जिम्मेदारी को भी निभाना था । इस संकोच से बचने के लिए उसी के सामानांतर रूप धारण की हुई किसी अन्य चिरपरिचित संज्ञा के साथ उसका नाम जोड़ने का सफल प्रयास होता है । यह नवगीत के साथ भी हुआ और इसे नवगीत के रूप में न जानते हुए नयी कविता का प्रतिरूप स्वीकार करने का सफल प्रयास हुआ।

नवगीत की विकास के संबंध में स्पष्ट करते हुए माधव कौशिक बताते हैं- “प्रयोगवाद के दौरान ही कवियों ने काव्य की समस्त विधाओं को त्यागकर केवल ‘कविता’ को ही प्रतिष्ठापित किया, इसलिए स्वयं गीतकारों ने गीत को छोड़कर कविताओं की ही रचना की| युगीन साहित्यिक परिदृश्य का दबाव कितना अधिक हो सकता है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि ‘युगीन परिप्रेक्ष्य के प्रतिकूल’ होने के भय से आक्रांत होकर समर्थ रचनाकारों ने भी गीत विरोधी माहौल को हवा दी|”8

नवगीत के प्रवर्तक, कवि एवं साहित्यकार राजेंद्र प्रसाद सिंह अपने आप में एक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था के समान माने जाते हैं । सन् 1958 ई० में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सिंह से सम्पादित गीत-संकलन “गीतांगिनी’ नामक पुस्तक में इस विधा के नामकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में उल्लेख मिलता है ।

गीत संकलन में सम्मिलित गीतों के विषय में अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं -“समकालीन हिन्दी-कविता की महत्तवपूर्ण और महत्तवहीन रचनाओं के विस्तृत आन्दोलन में गीत परंपरा ‘नवगीत’ के निकाय में परिणति पाने को सचेष्ट है। ‘नवगीत’ नयी अनुभूतियों की प्रक्रिया में संचयित मार्मिक समग्रता का आत्मीयपूर्ण स्वीकार होगा, जिसमे अभिव्यक्ति के आधुनिक निकायों का उपयोग और नवीन प्रविधियों का संतुलन होगा|”9

आजकल के समय में संस्कार एवं आचार-विचार के संदर्भ में लोक-मूल्यों का नाम लेने को रूढ़िवादी एवं परम्परावादी विचार को जड़ मानसिकता का पोषक सिद्ध करना समझा जाता है । इस पर अज्ञेय लिखते हैं - “लगभग यह स्थिति हो गयी है कि अगर आप में किसी तरह का भी कोई मूल्य-बोध बाकी है तो आप न आधुनिक हैं, न वैज्ञानिक हैं, न सभ्य हैं-केवल एक पुराने खूसट हैं जिसे अवज्ञापूर्वक जितनी जल्दी रास्ते से हटा दिया जाय उतना ही अच्छा|”10

हिंदी कविता में 'प्रयोगवाद' के उत्थान के साथ ही साहित्य की पूर्वागत मान्यताओं पर चोट पड़ने लगी और मौलिकता, नवीनता, आधुनिकता, प्रयोग, जटिल संश्लेषण, अनुबिंबन, छंद विरोध, मनोवैज्ञानिकता और राहों का अन्वेषण, आंदोलन की तीव्रता से चल पड़ा। व्यक्तित्व का बहुमुखी अंतःसंगीत गीतों में व्यक्त होने को अकुलाता रहा, पर वातावरण होड़ के तनाव से ऐसा भर गया कि पूर्वागत निकायों के रचनाकार पूर्वाग्रही और नए निकायों के अन्वेषक उपेक्षक हो चले। यह अतिवादिता बहुत बढ़ गई और नई कविता के वर्तमान दशक में तो गीत फरोश, 'जब गीतकार मर गया', 'चाँद रोने आया', 'गीत का स्मारक' आदि अनेक जुमले दिए हैं; साथ ही 'गीतों का हमला', श्रीनीरज की ओर से श्री दिनकर को उत्तर और गीतकारों के नाम पातियाँ भी मिली हैं। इस सरगर्मी के बीच एक अजीव ऊहापोह है।

वस्तुस्थिति यह कि अधिक गीतकार रचना की दिशा में वैषयिक और शैलीगत नवीनता के साथ उचित प्रगति नहीं पा रहे हैं और अपनी पूर्वागत सीमाओं से, उन रुचियों और त्रुटियों से भी इस तरह लापरवाह और अनुत्तरदायी होकर आग्रह-बद्ध हो गये हैं कि प्रगीत के क्षेत्र का पिछला गत्यवरोध गीत के क्षेत्र में आ गया है। इसीलिए गीतकारों को अधिक उदार, उदात्त, जागरूक, प्रगतिवान और आधुनिक होने की आवश्यकता है। नई कविता के अनेक कवि भी गीत रचना करते हैं और उनके गीतों में 'टेकनीक' की आधुनिकता तो रहती है, वैषयिक नवीनता का प्रायः अभाव ही रहता है, फिर भी वे पूर्वागत निकायों के गीतों में प्रायः बराबर है। फिर भी नई कविता के कृतित्व से युक्त या वियुक्त भी ऐसे ध्यातव्य कवियों का अभाव नहीं है, जो मानव जीवन के ऊँचे और गहरे, किंतु सहज-नवीन अनुभव की अनेकता, रमणीयता, मार्मिकता, विच्छिति और मांगलिकता को अपने विकसित गीतों में सहेज-सँवार कर नई 'टेकनीक' से, हार्दिक परिवेश की नई विशेषताओं का प्रकाशन कर रहे हैं। प्रगति और दृष्टि से उन रचनाओं का बहुत मूल्य है, जिनमें नई कविता के प्रगीत का पूरक बनकर 'नवगीत' का निकाय जन्म ले रहा है। नई कविता के सात मौलिक तत्व हैं - ऐतिहासिकता, सामाजिकता,

व्यक्तित्व, समाहार, समग्रता, शोभा और विराम, तो पूरक के रूप में 'नवगीत' के पाँच विकासशील तत्व हैं - जीवन-दर्शन, आत्मनिष्ठा, व्यक्तित्व-बोध, प्रीति-तत्व, और परिसंचय।

व्यक्तित्व-बोध के परिवेश में व्यक्ति, परिस्थिति और स्वभाव के परमाणुओं का सामंजस्य करने के लिए ही अंतर्विरोध, अन्यमनस्कता, निराशा और अन्य मनोवस्थाओं से गुजरकर जिस जिजीविषा की रक्षा करता है और अपने व्यक्तित्व की जिन संवेदनाओं में निमज्जन करता है, उस जिजीविषा और उन संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हरिवंशराय बच्चन, गोपाल सिंह नेपाली, धर्मवीर भारती, रमानाथ अवस्थी, रवींद्र भ्रमर, कृष्णनंदन पियूष, कुमारी मधु, रंगनाथ राकेश आदि के गीतों में हो रही है।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', आरसी प्रसाद सिंह, नरेंद्र शर्मा, गोपालदास 'नीरज'; हंसकुमार तिवारी, शंभुनाथ 'शेष', परमेश्वर 'द्विरेफ', जगदीश सलिल, शांतिस्वरूप कुसुम, राजेंद्र किशोर, चंद्रदेव सिंह, श्यामनंदन 'किशोर', रामचंद्र चंद्रभूषण आदि के गीतों में यह तत्व नई विधाएँ और विकास पा रहा है। 'गीतांगिनी' में संकलित नवगीतों पर विचारने से हम पाते हैं कि इसके सम्पादकीय में निरूपित पांचों तत्व गीत के स्वभावगत परिवर्तन को रेखांकित कर स्वयंसिद्ध हुए हैं । ये विशेष तत्व, वस्तुतः नयी पीढ़ी के स्वभाव में भी बदलाव ला रहे थे, जो उस पीढ़ी के गीतकारों में उजागर हुए । कालान्तर में 'गीतांगिनी' को हिन्दी नवगीत का नाम-लक्षण-निरूपक प्रथम ऐतिहासिक संकलन तथा इसके सम्पादक को नवगीत के नामकर्ता,तत्व-निरूपक एवं तत्पर व्याख्याता और निःस्वार्थ प्रवर्तक के रुप में स्वीकार किया गया।

उल्लेखनीय है कि महाप्राण निराला के अलावा तद्युगीन अनेक महत्वपूर्ण रचनाकारों के नए गीत पहली बार 'गीतांगिनी' (1958) में ही बतौर 'नवगीत' प्रकाशित हुए थे. इसलिए महाकवि निराला को हिन्दी नवगीत का प्रवर्तक कहना वस्तुत: उन जैसे महाप्राण विश्वकवि की आड़ लेकर 'गीतंगिनी' के ऐतिहासिक महत्व का शिकार करने जैसा है. प्रमाण के लिए 'गीतांगिनी' में सकलित निराला का गीत द्रष्टव्य है जो वैधानिक एवं भाषिक संरचना की दृष्टि से उनके दूसरे गीतों से भिन्न और विशिष्ट

राजेन्द्र प्रसाद सिंह की पहली काव्यकृति 'भूमिका' (1950,भारती भण्डार,इलाहाबाद) की रचनाओं पर गंभीरता से विचारने पर स्पष्ट हो जाता है कि इस संग्रह के अनेक गीत अवश्य ही 'नवगीत' के आरंभिक स्वरूप को पता देने में सक्षम हैं । मनोवस्था के तापमान से जीवन्त इन गीतों में उल्लेखनीय हैं – 'गा मंगल के गीत सुहागिन,चौमुख दियरा बाल के' और 'शरद की स्वर्ण-किरण बिखरी' । बाद में ये दोनों गीत 'अज्ञेय' द्वारा संपादित 'प्रतीक' (द्वैमासिक)में 1949 के 'शरद' अंक में छपे और प्रकृति-काव्य-संकलन 'रूपांबरा' (सम्पा॰ अज्ञेय) में भी संकलित किए गए । इनके अतिरिक्त - 'सब सपने टूटे संगिनी,बिजली कड़क उठी', 'मेरे स्वर के ये

बाल-विहग जा रहे उड़े किस ओर', 'सखि, मधु ऋतु भी अब आई', 'मधु मंजरियाँ, नवफुलझरियाँ', 'यह दीवार कड़ी कितनी है'- आदि गीत विशेष रूप से ध्यातव्य हैं,जिनमें नवगीत को अंकुरित करने की तैयारी है ।

हिन्दी के प्रमुख नव नवगीतकार और उनकी कृतियाँ :

शंभूनाथ सिंह-(1) दर्द जहाँ नीला है (1977) (2) समय की शिला पर (1968) (3) कलापी(4) संचयिता (5) जीवन और योवन (6) पाँचजन्य (7) माध्यम मैं (8) खंडित सेतु(9) प्रेमगीत (10) रूपरश्मि (11)छायालोक (12) उदयाँचल (13) मनवन्तर(14) दिवालोक (1951), वीरेन्द्र जैन -झुलसा है छायानट धूप में नीरज -(1) संघर्ष (2) अन्तर्ध्वनि (3) बादर बरस गयो (4) प्राण-गीत (5) दर्द दिया है (6)बादर बरस गयो (7)नीरज की पाती (8) नदी किनारे (10) आसावरी (11) लहर पुकारे (12) मुक्तकी (13) गीत भी अगीत भी। रवीन्द्र भ्रमर-(1) रवीन्द्र भ्रमर के गीत (2) इतिहास दुबारा लिखो (3) सोन मछरी मन बसी राजेन्द्र प्रसाद सिंह-(1) भूमिका (1950) (2) दिग्वधू (1956) (3) संजीवन कहाँ (1965) (4) आओ खुली बयार (5) भरी सड़्क पर (6) गरज आधी रात का (7) रात आँख मूँद कर जगी कुँवर बैचेन- (1) पिन बहुत सारे (1972) (2) भीतर साँकल बाहर साँकल (1978) (3) शामियाने वीरेन्द्र मिश्र- (1) वाणी के कलाकार (2) अविराम चल मधुमती (3) गीतम (4) लेखनी बेला (5) काले मेघा पानी दे (6) शांति गंधर्व। ठाकुर प्रसाद सिंह- (1) वंशी और मदाल (1959) (2) महामानव (प्रबंध काव्य-1946) (3) हारी हुई लड़ाई लड़ते हुए (काव्य संग्रह-1988) राजेन्द्र गौतम- (1) गीत पर्व आया है (1983) (2) पंख होते है समय के (1989) बरगद जलते है (1998) काँच के (1983) (4) महावर इन्जारों का (1983) गोरख पाण्डेय- (1) भोजपुरी के नौ गीत (1978) (2) जागते रहो सोने वालों (1983) (3) स्वर्ग से बिदाई (1989) (4) समय का पहिया (5) लोहा गरम हो गया है। अंतिम चारों काव्य-संग्रह है

'गीतांगिनी' के प्रकाशन के बाद राजेन्द्र प्रसाद सिंह के कई स्वतन्त्र नवगीत संग्रह प्रकाशित हैं । इनमें 'आओ खुली बयार', 'रात आँख मूँद कर जगी', 'भरी सड़क पर' के अलावा 'गज़र आधी रात का' तथा 'लाल नील धारा' सदृश जनगीत संग्रह महत्वपूर्ण हैं ।

सन् 1969 ई० के 'गीतांगिनी पत्रिका' के 'नवगीत अंक' में डॉ० राजेंद्र प्रसाद सिंह ने इस नाम की सार्थकता और उसके स्थापना के पीछे व्याप्त कारणों पर अपना विचार प्रकट करते हुए लिखा- "गीतांगिनी के सहयोगियों ने आधुनिकतर गीत, बिम्ब गीत, तात्विक गीत आदि कुछ नामों का सुझाव दिया था किन्तु मैनें गीतों की संभावना को काल, प्रवृत्ति और शिल्प की एकान्तिक सीमा में बांधना चाहा था, तभी नवगीत की संज्ञा दी| नयी कविता के कवियों द्वारा प्रस्तुत गीत, पिछली पीढ़ियों के परवर्ती और ईशत् भिन्न गीत और छायावादोत्तर विवेककल्प गीतकारों के नवयोजित गीत कोई श्रेणिक नाम नहीं पा सके थे| साथ ही नई पीढ़ी के

गीतकार भी अपने सहज नूतन गीतों के लिए ऐसे नाम खोज रहे थे...अंततः नवगीत संज्ञा ही सर्वाधिक उचित प्रतीत हुई|" 12

गीत के पारंपरिक विधा में समाज में नित-प्रतिदिन बढ़ रहे जनता के असंतोष, बदलते जीवन-मूल्यों, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर घटते घटनाओं, ग्रामीण बोध की व्यापकता और महानगरीय शहरीकरण के प्रति बढ़ता आक्रोश की अभिव्यक्ति पाना आसान नहीं था । इस कारण से नवीन भाव, शिल्प तथा कथ्य के नवीन आयामों के साथ साहित्यकारों ने नवगीत विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना आरंभ किया । नवगीत में पारंपरिक गीतों के शिल्प-बुनावट और भाव-सम्प्रेषण की भंगिमा से मुक्त होने की छटपटाहट दिखती है । नवगीत में नवीन आयामों एवं परिधानों को स्वीकारने की ललक स्पष्ट रूप में दिखाई देती है ।

संदर्भ :

1. शुक्ल, डॉ० जयशंकर, तम भाने लगा, दिल्ली, पूनम प्रकाशन, 2014-2015 (भूमिका से), पृष्ठ-13
2. स्वाततंत्र्योत्तर राजस्थान का हिन्दी इतिहास/सं.राजेंद्र शर्मा/ पृष्ठ सं-43
3. हिंदी नवगीत : सृजन और सन्दर्भ, डॉ० कुंदनलाल उप्रेती का लेख,
4. राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिका मधुमती/ मार्च, 1991/पृष्ट सं-07
5. द्रष्टव्य-कुमार, डॉ० सुरेन्द्र, माधव कौशिक का रचना संसार, दिल्ली, ज्ञानोदय, 2007, पृष्ठ-121
6. राज. पत्रिका/ 'कविता का एक जीवन्त रूप : नवगीत' लेख से/ दिनांक - 17 जून, 2001.
7. हिन्दी साहित्यकारों से साक्षात्कार/ डा़ॅ रणवीर सिंह राणा द्वारा हरिवंशराय बच्चन के साक्षात्कार आलेख 'तीर पर कैसे रूकूँ मैं, आज लहरों में निमंत्रण' से/पृष्ठ-122.
8. कौशिक, माधव, नवगीत की विकास यात्रा, पंचकूला, चण्डीगढ़ साहित्य अकादमी, 2007, पृष्ठ-4-5
9. द्रष्टव्य-कौशिक, माधव, नवगीत की विकास यात्रा, पंचकूला, हरियाणा साहित्य अकादमी,2007,पृष्ठ-7
10. वात्स्यायन, सच्चिदानन्द, युग संधियों पर, दिल्ली, सरस्वती विहार, 1981, पृष्ठ-75
11. सिंह, डॉ० राजेंद्र प्रसाद, गीतांगिनी पत्रिका, (नवगीत अंक) जुलाई, 1969, पृष्ठ-53
    मधुकर अष्ठाना, पहने हुए धूप के चेहरे, मुरादाबाद : गुंजन प्रकाशन, पृष्ठ-105-106
12. शुक्ल, डॉ० जयशंकर, तम भाने लगा, दिल्ली, पूनम प्रकाशन, 2014-2015 (भूमिका से), पृष्ठ-13

****